U.G.C. CENTRE FOR ADVANCED STUDY (CAS)

Dr. Rajendra Prasad Sharma
Co-ordinator, CAS &
Head of the Department

DEPARTMENT OF PHILOSOPHY
(CAS Building)
University of Rajasthan
Jaipur-302004 (INDIA)

मान्यवर .....

आपको यह जानकर हर्ष होगा कि दर्शनशास्त्र विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर ; *"महाभारतीय गीताओं का दार्शनिक लक्ष्य"* विषय पर 22–23 मार्च 2017 को द्विदिवसीया राष्ट्रियसंगोष्ठी का आयोजन कर रहा है। इस संगोष्ठी में आप सादर आमन्त्रित है। संगोष्ठी के विषय का विवरण है कि महाभारत को न केवल पंचम वेद कहा गया है, अपितु अपनी महत्ता एवं गुरूता की दृष्टि से वेदों से भी श्रेष्ठ माना गया है। जिस प्रकार वैदिक साहित्य का दार्शनिक अंश उपनिषद् के नाम से जाना जाता है, वैसे ही महाभारत का महत्वपूर्ण दार्शनिक अंश गीता नाम से प्रख्यात है। महाभारत में 93 गीताओं का अनुसंधान अभी तक हो चुका है, (उनकी सूची संलग्न है) उनके दार्शनिक अवदान की मीमांसा संगोष्ठी का लक्ष्य है। महाभारत की गीताओं के इस महत्त्व को यह श्लोक स्पष्ट करता है–

पाराशर्यवचः सरोजममलं गीतार्थगन्धोत्कटम्,
नानाख्यानककेसरं हरिकथासम्बोधनाबोधितम्।
लोके सज्जनषट्पदैरहरहः पेपीयमानं मुदा,
भूयाद् भारतपङ्कजं कलिमलप्रध्वंसि नः श्रेयसे।। – *भविष्यपुराण* 1.4

पराशर मुनि के पुत्र व्यास का वचन (महाभारत) ऐसा अमल कमल है जिसमें गीतार्थ उत्कट गन्ध विद्यमान है। अनेक आख्यान केशर है जो हरिकथा के सम्यक्बोधन से आबोधित (शिक्षित) ज्ञान शक्ति सम्पन्न हैं। लोक में सत्पुरुष रूप षट्पदों द्वारा प्रतिदिन बड़े चाव से इसके मकरन्द का रसपान किया जाता है। इस प्रकार यह महाभारत रूप अमल कमल इस कलिकाल के मल को नष्ट करने वाला हमारे कल्याण के लिए हो।

महाभारत की भगवद्गीता एवं सनत्सुजात गीता का महत्त्व देखते हुए स्वयं आद्य शंकराचार्य ने इस पर भाष्य का प्रणयन किया है तथा प्रस्थानत्रयी में इसको स्मृति प्रस्थान के रूप में दार्शनिकों ने मान्यता दी है। जैसे भगवद् गीता उपनिषदों के सारभूत ज्ञान सिद्धान्तों के सरल एवं युक्तिपूर्ण व्याख्या प्रस्तुत करती है। वैसे ही महाभारत में उपलब्ध अनेक गीताएँ भी विविध दार्शनिक तत्त्वों की प्रतिपादिका है। वस्तुतः महाभारतीय गीताएं आर्ष प्रतिभा का दिव्योपदेश है, जिसमें प्रश्नकर्ता की शंकाओं का शास्त्रीय आधार पर दार्शनिक समाधान किया जाता है। दिव्य ज्ञान से सम्पन्न ये गीताएँ अद्भुत, अमूल्य तथा अनुपम दार्शनिक निधि है, जो जिज्ञासाओं, नैतिक समस्याओं एवं आध्यात्मिक प्रश्नों का भलीभाँति समाधान करती है। इस दुर्लभ ज्ञान को जनसामान्य के सामने लाना ही प्रकृत संगोष्ठी का प्रधान ध्येय है।

महाभारत में गीता को गीत, इतिहास, उपनिषद्, रहस्य, गाथा, संवाद, आदि शब्दों से अभिहित किया गया है। यह सत्य है कि महाभारत में प्राप्त भगवद्गीता की वैचारिक जगत् में पूर्णतः प्रसिद्धि है जबकि अनुगीता की ख्याति अंशतः हुई है। महाभारत में उपलब्ध अन्य गीताओं की स्वतन्त्र रूप में चर्चा भारतीय दार्शनिक परम्परा में नगण्य रूप में हुई है। महाभारत के प्रसिद्ध टीकाकार नीलकण्ठ ने पुष्पिकाओं में 14 गीताओं का नामोल्लेख किया है। लोकमान्य तिलक ने *गीतारहस्य* में 12 गीताओं को मुख्य रूप से उल्लिखित किया है। पं. जानकीनाथ शर्मा 16 गीताओं का निर्देश अपनी पुस्तक *महाभारत परिचय* की भूमिका में किया है। डॉ. सुखमय भट्टाचार्य ने अपनी कृति *महाभारतकालीन समाज* में 16 गीताओं का उल्लेख किया है। प्रो. संगमलाल पाण्डेय ने 7 गीताओं का विवेचन अपने ग्रन्थ *भारतीय दर्शन का सर्वेक्षण,* पृ. 45–47 में किया है। डॉ. आर. नीलकण्ठ ने अपनी शोध कृति (अंग्रेजी) *महाभारत और पुराण की गीताओं के अध्ययन* में 16 गीताओं का वर्णन किया है। पं. श्रीराम शर्मा ने चौबीस गीता ग्रन्थ में 28 गीताओं की स्वीकृति दी है। वीरेन्द्र शर्मा ने *गीता संचयन* में 18 तथा शोधविदुषी डॉ. प्रज्ञा (हरिकृष्ण

ठाकर) जोशी ने अपने गुजराती शोध ग्रन्थ *महाभारत की गौण गीता : एक विवेचनात्मक अध्ययन* में 44 गीताओं का विवेचन किया है। इस विषय में दर्शन विभाग में पर्याप्त अनुसंधान करते हुए महाभारत में उपलब्ध 93 गीताओं का स्वरूप निर्धारण किया गया है। जिसकी सूची संलग्न है।

इन समस्त गीताशास्त्रों का प्रतिपाद्य जगत् एवं जीव की क्षणभंगुरता, कर्म एवं पुनर्जन्मवाद, कर्मफल की अनिवार्यता, सदाचारों में प्रवृत्ति,सांसारिक द्वन्द्वों से मुक्ति, दुःखों का आत्यन्तिक विनाश, कर्त्तव्याकर्त्तव्यविवेक की प्राप्ति, परमानन्द की प्राप्ति, व्यक्तिधर्म एवं वर्णधर्म का अनुपालन, नैतिक मूल्यों की उपादेयता, अवतारवाद, मानसिक एकाग्रता, पाप–पुण्य के प्रति व्यक्तिचेतना, अहिंसात्मक कर्मों की कर्त्तव्यता, यज्ञ की अनिवार्यता, संन्यास, निष्काम प्रवृत्ति, त्यागपूर्वक भोगमार्ग एवं तपश्चरण, शब्दब्रह्म का ज्ञान, अविद्या की निवृत्ति, शास्त्रज्ञान की श्रेष्ठता का प्रतिपादन, इन्द्रियवशीकरण, तृष्णोन्मूलन, आस्तिक्य बुद्धि एवं धर्मलक्षण, सत्त्वादि गुणों की प्रकृति एवं प्रभाव, आत्मज्ञान, पांचभौतिक सृष्टि का निरूपण, आश्रम धर्म का पालन, मन या चित्त का स्थिरीकरण, आसक्ति का उन्मूलन, विषयवासनाओं का परित्याग, जीवात्मा एवं परमात्मा का संबंध, कर्मबन्ध से मुक्ति के उपायों का प्रतिपादन, लौकिक एवं पारलौकिक सुखों का चिन्तन, दान की महत्ता, श्रेयस का स्वरूप, वैराग्य का निरूपण, त्रिविध गति एवं परमगति, कामनाओं का परित्याग, स्थितप्रज्ञता का निरूपण, भक्तिमार्ग का निरूपण एवं नवधा भक्ति, स्वधर्म एवं परधर्म, सृष्टि की उत्पत्ति, प्रकृति एवं पुरूष का निरूपण, तत्त्व साक्षात्कार, दैवी एवं आसुरी सम्पत्ति, शरणगति रहा है।

आप इस विषय के प्रौढ़ मर्मज्ञ हैं, अतः संगोष्ठी की पूर्ण सफलता में आपका हार्दिक सहयोग अपेक्षित है। इस सारस्वत अनुष्ठान में किसी विशेष उल्लेखनीय एवं महत्त्वपूर्ण बिन्दु पर अपने लिखित शोध पत्र के वाचन तथा सहभागियों के साथ विचार–विमर्श का विशेष सहयोग प्रदान करें। आप अपने आगमन की स्वीकृति, आत्मवृत्त, निम्नविवरण तथा विषय–सार की सूचना दिनांक 15.03.2017 तक अवश्य भेज देवें, पूर्णरूप से लिखित शोधपत्र 19.03.2017 तक अवश्य भेज दे, जिससे कार्यक्रम को व्यवस्थित किया जा सके। संगोष्ठी में प्रस्तुत शोध पत्रों में से चयनित शोध लेखों को *जर्नल ऑफ फाउण्डेशनल रिसर्च* **ISSN 2395-5635** में प्रकाशित किया जायेगा। शोधपत्र हिन्दी, संस्कृत या अंग्रेजी में लिखा जा सकता है।

आपको हमारे विभाग द्वारा नियमानुसार आतिथ्य, यात्रा भत्ता (द्वितीय श्रेणी या तृतीय श्रेणी वातानुकुल/सामान्य शयनयान श्रेणी) तथा मानदेय प्रदान किया जायेगा। आवास एवं भोजन की व्यवस्था विश्वविद्यालय अतिथि गृह एवं देराश्री शिक्षक आवास में की जायेगी। रेल एवं बस यात्रा के टिकट की प्रति भुगतान हेतु अनिवार्य रूप से प्रस्तुत करनी है।

सादर।

दिनांक– 06.03.2017 भवदीय

श्री अनुभव वार्ष्णेय	डॉ. मनीष सिनसिनवार	डॉ. अरविन्द विक्रम सिंह	डॉ. राजेन्द्र प्रसाद शर्मा
आयोजन सचिव	उप–संयोजक	सह–संयोजक	संयोजक संगोष्ठी
मो.– 9772242525	मो.– 8560825276	मो.– 9460389042	मो.– 094139–70601

ई–मेलः**rajendrasharmauniraj@gmail.com**
hodphilosopohyuniraj@gmail.com

विवरण

नाम आयु
पद एवं संस्था का पता
घर का पता
दूरभाष व चलभाष
ई–मेलः
शोध पत्र का शीर्षक
आगमन का समय एवं दिनांक
आवास स्थान की आवश्यकता है या नहीं

अनुसन्धान के द्वारा महाभारत में उपलब्ध गीताओं की ग्रन्थ क्रमानुसार सूची

क्र.	गीताएँ	पर्व एवं अध्याय	अध्याय	श्लोक	
1.	शौनक गीता	वनपर्व, अध्याय	2	1	84
2.	पुलस्त्यगीता	वनपर्व, अध्याय,	82–85	4	650
3.	धौम्यगीता	वनपर्व, अध्याय	86–90	5	128
4.	अष्टावक्रगीता	वनपर्व, अध्याय,	132–134	3	94
5.	हनुमद्गीता	वनपर्व, अध्याय,	146–151	6	263
6.	आर्ष्टिषेण गीता	वनपर्व, अध्याय,	159	1	32
7.	नहुष गीता	वनपर्व,	180–81	2	89
8.	मार्कण्डेयगीता	वनपर्व, अध्याय,	183–191	9	579
9.	(सरस्वतीगीता)	वनपर्व, अध्याय,	186	1	30
10.	(मत्स्योपाख्यानगीता)	वनपर्व, अध्याय,	187	1	58
11.	बक गीता–	वनपर्व, अध्याय,	193	1	37
12.	युधिष्ठिरगीता–ख	वनपर्व, अध्याय,	200–204	5	274
13.	कौशिकगीता (व्याधगीता)	वनपर्व, अध्याय	205–216	12	454
14.	सावित्रीगीता	वनपर्व, अध्याय,	297	1	112
15.	युधिष्ठिरगीता–खख	वनपर्व,	311–314	4	228
16.	सनत्सुातीयगीता	उद्योगपर्व,	41–45	5	196
17.	भगवद्गीता	भीष्मपर्व, अध्याय	25–42	18	700
18.	विदुरगीतास्त्री	पर्व, अध्याय,	1–6	6	145
19.	जनकगता	शान्तिपर्व,	17–18	2	64
20.	सेनजिद्गीता–ख	शान्तिपर्व,	25	2	36
21.	अश्मगीता	शान्तिपर्व,	28	2	59
22.	स्वायंभुवमनुगीता	शान्तिपर्व,	36	1	50
23.	भीष्मस्तवराजगीता	शान्तिपर्व,	47	1	
24.	मनुगीता–ख	शान्तिपर्व,	56	1	05
25.	उशनोगीता	शान्तिपर्व,	56	1	06
26.	भार्गवगीता	शान्तिपर्व,	57	1	06
27.	यज्ञगीता	शान्तिपर्व,	60	1	15
28.	नारायणगीता	शान्तिपर्व,	61	1	21
29.	आङ्गिरस (बृहस्पति) गीता	शान्तिपर्व,	68	1	61
30.	कैकेयगीता	शान्तिपर्व,	77	1	34
31.	उतथ्यगीता	शान्तिपर्व, अध्याय	90–91	2	101
32.	वामदेवगीता	न्तिपर्व, अध्याय,	92–94	3	77
33.	ऋषभगीता	शान्तिपर्व, अध्याय	125–128	4	91
34.	ब्रह्मगीता–ख	शान्तिपर्व, अध्याय,	136	1	11
35.	भीष्मगता	शान्तिपर्व, अध्याय	158–173	16	570
36.	(खड्गगीता)	शान्तिपर्व, अध्याय	166	1	89
37.	(षड्जगीता)	शान्तिपर्व, अध्याय,	167	1	51
38.	सेनजिद्गीता –खख	शान्तिपर्व,	174	1	1–55
39.	पिङ्गलागीता	शान्तिपर्व, अध्याय	174	1	56–63
40.	शम्पाकगीता	शान्तिपर्व, अध्याय,	176	1	23
41.	मङ्किगीता	शान्तिपर्व, अध्याय,	177	1	54
42.	बोध्यगीता	शान्तिपर्व, अध्याय,	178	1	13
43.	आजगरगीता	शान्तिपर्व अध्याय,	179	1	37
44.	शृगालगीता	शान्तिपर्व, अध्याय,	180	1	54
45.	कर्मफलगीता	शान्तिपर्व, अध्याय	181	1	20
46.	भृगुगीता	शान्तिपर्व,	182–192	11	261
47.	जापकगीता	शान्तिपर्व, अध्याय	199–200	2	162
48.	मनुगीता–खख	शान्तिपर्व, अध्याय,	201–206	6	151
49.	विष्णुवराह(अनुस्मृति)गीता	शान्तिपर्व,	207–209	3	207
50.	गुरुशिष्यगीता–ख	शान्तिपर्व, अध्याय,	210–211	2	63
51.	पञ्चशिखगीता	शान्तिपर्व, अध्याय	218–219	2	116
52.	सनत्कुमारगीता	शान्तिपर्व, अध्याय,	222	1	37

53.	प्रह्लादगीता	शान्तिपर्व,	222	1	37
54.	बलिवासवगीता	शान्तिपर्व	223–228	6	366
55.	(नमुचिवासवगीता)	शान्तिपर्व,	226 1	23	
56.	(लक्ष्मीवासवगीता)	शान्तिपर्व,	225–228	4	276
57.	जैगीषव्यगीता	शान्तिपर्व, अध्याय,	229	1	25
58.	व्यासगीता–ख	शान्तिपर्व, अध्याय	231–255	25	656
59.	मृत्युगीता	शान्तिपर्व,	256–258	3	85
60.	जाजालिगीता	शान्तिपर्व, अध्याय	260–264	5	194
61.	ब्रह्मगीता– खख	शान्तिपर्व,	264	1	23
62.	विचख्नुगीता	शान्तिपर्व, अध्याय,	265	1	14
63.	गौतमचिरकारिगीता	शान्तिपर्व, अध्याय	266	1	78
64.	कपिलगीता	शान्तिपर्व, अध्याय	268–270	3	155
65.	असितदेवल गीता	शान्तिपर्व, अध्याय,	275	1	39
66.	माण्डव्यजनकगीता	शान्तिपर्व, अध्याय,	276	1	14
67.	पितापुत्रगीता	शान्तिपर्व, अध्याय,	277	1	39
68.	हारीतगीता	शान्तिपर्व, अध्याय,	278	1	23
69.	वृत्रगीता	शान्तिपर्व, अध्याय,	279–280	2	104
70.	समङ्गगीता	शान्तिपर्व, अध्याय,	286	1	21
71.	श्रेयोवाचिका (गालव) गीता	शान्तिपर्व,	287 1	59	
72.	अरिष्टनेमिगीता	शान्तिपर्व, अध्याय,	288	1	47
73.	शुक्रगीता	शान्तिपर्व, अध्याय,	289	1	38
74.	पराशरगीता	शान्तिपर्व, अध्याय	290–298	9	317
75.	हंसगीता	शान्तिपर्व, अध्याय,	299	1	46
76.	सांख्ययोगगीता	शान्तिपर्व, अध्याय,	300–301	2	178
77.	वसिष्ठगीता	शान्तिपर्व, अध्याय,	302–308	7	302
78.	मुनिगीता	शान्तिपर्व, अध्याय,	309	1	25
79.	याज्ञवल्क्यगीता	शान्तिपर्व, अध्याय,	310–318	9	290
80.	सुलभागीता	शान्तिपर्व, अध्याय,	320	1	193
81.	व्यासगीता– खख	शान्तिपर्व,	321	1	94
82.	ययातिगीता	शान्तिपर्व, अध्याय,	326	1	51
83.	नारदगीता	शान्तिपर्व, अध्याय	329–331	3	154
84.	नारायणीयगीता	शान्तिपर्व, अध्याय	339–351	13	904
85.	बृहस्पतिगीता	अनुशासनपर्व, अ.,	111–113	3	179
86.	व्यासमैत्रेयगीता	अनुशासनपर्व, अ.,	120–122	3	68
87.	माहेश्वरगीता	अनुशासनपर्व, अ.,	140–143	4	436
88.	कामगीता	अश्वमेधपर्व, अध्याय	13	1	22
89.	अनुगीता	अश्वमेधपर्व, अध्याय	16–51	36	1041
90.	(कश्यपगीता)	अश्वमेधपर्व, अध्याय	16–19	4	(189)
91.	(ब्राह्मणगीता)	अश्वमेधपर्व, अध्याय,	20–34	15	(332)
92.	(अम्बरीषगीता)	अश्वमेधपर्व,	31	1	(09)
93.	(गुरुशिष्यगीता)	अश्वमेधपर्व,	35–51	17	(520)